ISSN : 2583-2948

संपादकीय

संस्कृति भारतीय जन – मानस के लिए एक परिचित संकल्पना है। इस शब्द के उच्चारण मात्र से ही हमारी चेतना में एक संस्कारित और परिष्कृत रुचिवाला व्यक्तित्व उभर आता है। भारतीय संस्कृति का अवलोकन करें तो अवगत होंगे कि हमारी संस्कृति अति समृद्ध और व्यापक है। शिक्षा का स्तर अति विशाल रहा है। नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों में देश विदेश के नामचीन लोगों ने विद्यार्जन किया है। स्वामी विवेकानंद और चाणक्य के नीति का अनुपालन आज भी वैश्विक स्तर पर किया जाता है। स्वतन्त्रता के उपरांत प्रगति के अधिकांश कार्य हमारे समाज, शिक्षा जगत, व्यापार और विज्ञान जगत में हुए परंतु इस विकास यात्रा में अनचाहे ही सही परंतु भारतीय मूल संस्कृति और उसकी भाषाएँ हाशिये पर आने लगीं। संस्कृति के नाम पर पापुलर कल्चर को एक नई अवधारणा के साथ अपने वेग में सबको प्रवाहित करने में विशेष सफलता मिली। कैफे कल्चर, डेनिम – कल्चर, एंटरटेनमेंट कल्चर, लीव – इन रिलेशनशिप कल्चर, फिटनेस कल्चर, मोबाइल कल्चर, पब – कल्चर, मॉल – कल्चर, डेटिंग – कल्चर, विकेंड – मैरिज कल्चर के आकर्षण ने व्यवसाय में खूब इजाफ़ा कमाया है और आज की पीढ़ी को अपनी परिधि में शामिल होने के अनेक मार्ग प्रशस्त किये । इन सबमें अगर कुछ छूट गया या पर्याप्त मात्रा में विलुप्त हो गया तो वह है भारत की भारतीयता। जहां अतुल भंडार और विकास के अपरिमित साधन होते हुये भी हमारी कलाएं हमसे बिछड़ कर अन्य देशों में सुशोभित हो रही हैं वह भी प्रवासी भारतीयों के माध्यम से तथा शोध के द्वारा। 2020 में नयी शिक्षा नीति को लागू किया गया और उसमें भारतीय भाषाओं , कला, संस्कृति को वरीयता दी गई। देश की विलुप्त होती प्रजातियाँ, समस्त कलाओं को पुनर्स्थापित करने के लिए जागरूकता आई और इस कमतर होते परिस्थिति का आभास कर भारत सरकार और अन्य शैक्षिक संस्थाएं इसके उत्थान हेतु अग्रसर हो रही हैं और अपनी – अपनी नव्य योजना, वैचारिकता व कर्मठता से इसे विकसित करने में योगदान दे रही हैं। इस पुनीत प्रयास में निजी संस्थाएं भी उत्साह के साथ अपना योगदान देने में पीछे नहीं हैं। इसी सार्थक उद्देश्य को फलीभूत करने के लिए तथा और अधिक उपयोगी बनाने के लिए भारतीय भाषाओं के वैशिष्ट्य को नवीनतम आयाम देने के लिए अलायंस स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स और भारतीय भाषा संस्थान मैसूर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजीत द्वि – दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के निर्धारित विषय पर केन्द्रित 'अनुकर्ष' पत्रिका में शोध – सार पाठकों के समक्ष है। यह अंक कई अर्थों में विशेष है जैसे- इसमें व्यावसयिक शिक्षण के कई आयाम उद्भासित हैं, देश भर से सम्मानित व प्रबुद्धजन ने अपना लेखकीय सहयोग इसमें दिया है और एक साथ हिन्दी, कन्नड़, मलयालम और अँग्रेजी भाषा में सारगर्भित शोध – सार पढ़ने को प्राप्त होंगे। आशा है कि शोध – सार पढ़ने के उपरांत बहुत सी नव्य व सार्थक जानकारी अध्येताओं और पाठकों को उपलब्ध होंगी। इसका सम्पूर्ण अंक जुलाई मास के द्वितीय सप्ताह तक आयेगा। संगोष्ठी विशेषांक का यह अंक हार्ड कॉपी में भी उपलब्ध होगा, मात्र उनके लिए जिनके लेख इस अंक में संलग्न हैं। इस कार्य को अंतिम प्रारूप देने में जितने भी शिक्षकविद व आलोचकों ने अपना लेखकीय सहयोग दिया है उन सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ । अनुरोध है कि अपने लेख के साथ ही साथ अन्य लेखों को भी पढ़ें और अपनी प्रतिक्रिया हमें प्रेषित करें।

धन्यवाद

अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी